।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण

वैशाख कृ.१ युगाब्द ५१२०, वि.२०७५

१ अप्रेल २०१८

वर्ष ३४ : अंक १

परम सुहृद पाठक-गण,

एक मित्र को और पड़ौस के गाँव/बस्ती में सदस्य बनायें

पाथेय कण का इस वर्ष का सदस्यता अभियान पूर्णता की ओर है। सभी पाठकों से आग्रह है कि जिनकी सदस्यता नहीं हुई है, वे शीघ्र ही अपना सदस्यता शुल्क जमा करा कर नवीन सदस्यता ले लें।

जिन पाठकों के पास हमारे कार्यकर्ता नहीं पहुँच पाये उनसे आग्रह है कि वे पाथेय कण कार्यालय पर डाक द्वारा धनादेश (मनीआर्डर) भिजवा कर सदस्यता ग्रहण कर लें। जिससे आपको समय पर पाथेय कण प्रेषित किया जा सके। इसी आशा के साथ

जय श्रीराम।

आपका
प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष ₹ 100/- पन्द्रह वर्ष ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

टोंक से अररिया तक लीगी मानसिकता का उभार

टोंक में वर्ष प्रतिपदा अर्थात् वि.२०७५ के शुभारम्भ (१८ मार्च) पर लोग आनन्दित हो शोभा-यात्रा निकाल रहे थे। एकाएक मुस्लिम बहुल बड़ा कुंआ क्षेत्र से रैली पर पत्थर बरसने लगे। शोभा-यात्रा में अफरा-तफरी मच गई। जिहादियों ने कुछ वाहनों में आग भी लगा दी। पथराव तथा आगजनी में अति.पुलिस अधीक्षक सहित एक दर्जन लोग घायल हो गये।

– इसके ठीक एक महीने पहले १८ फर. को जिहादियों ने टोंक में ही एक बारात पर हमला कर दिया। नगर के हीरा चौक क्षेत्र से गाजे-बाजे के साथ एक बारात निकल रही थी। उसी समय एक मस्जिद से कुछ लोग निकले और **मस्जिद के पास बाजे बजाने पर आपत्ति करने लगे**। बाजे जब नहीं रुके तो बारात पर पथराव होने लगा। इसी के साथ हथियार लेकर आस-पास के काफी लोग बारात को घेर कर खड़े हो गये।

– २६ जनवरी को **कासगंज** (उ.प्र.) में तिरंगा फहराते अंकित को जिहादियों ने गोली मार दी। इसके कुछ दिनों बाद बिहार के **भागलपुर** में जिहादियों ने एक बारात में बज रहे बैण्ड पर एतराज किया और बारातियों की पिटाई कर दी।

– बिहार के अररिया लोक सभा क्षेत्र के उपचुनाव में राष्ट्रीय जनता दल का उम्मीदवार और तस्लीमुद्दीन का बेटा चुनाव जीत गया। तस्लीमुद्दीन पर कई गम्भीर आपराधिक मामलों के आरोप लगे थे। उसके बेटे सरफराज आलम की जीत पर जो जुलूस निकला उसमें **पाकिस्तान-जिंदाबाद** के नारे लगे। उधर कश्मीर में एक नेता ने कहा कि भारत, म्यांमार, श्रीलंका और बांग्लादेश के सभी मुसलमान पाकिस्तानी हैं।

मामूली सा भी इतिहास आप ने पढ़ा होगा तो ध्यान में आयेगा कि भारत के दो टुकड़े कराने वाली मुस्लिम लीग के जिहादी आजादी के पहले ठीक ऐसी ही हरकतें कर रहे थे। नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन में जिहादियों ने राष्ट्र-गीत 'वन्देमातरम्' के गायन का जबर्दस्त विरोध किया। मस्जिद के सामने कोई बाजा नहीं बजा सकता था। हिन्दू समाज की शोभा-यात्राओं पर जिहादी तत्व हमला कर लूट-पाट करते थे। आज भी वे ही स्थितियाँ बन रही हैं। उधर प्रशासन सेकुलरवाद की खुराक ले कर ऐसी घटनाओं को मूक-दर्शक सा देखता रहता है। प्रशासनिक सेवाओं के प्रशिक्षण के समय ही सेकुलरवाद की ऐसी घुटी पिला दी जाती है कि प्रशासन हाथ बांधे खड़ा रहता है और उपद्रवियों को सहन करता रहता है। इसी को **जिम्मीवाद** कहा जाता है। इसके अनुसार तथाकथित अल्पसंख्यक नंगा-नाच करें तो भी रोको नहीं और बहुसंख्यक छींक भी दें तो बन्द कर दो।

वे भी बेचारे यह सब करने को बाध्य हो जाते हैं। कोई कड़ी कार्रवाई यदि वे करें तो मीडिया, सेकुलरवादी दल तथा सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ उनके पीछे पड़ जाता है। सेना के जवानों के खिलाफ जम्मू-कश्मीर में पुलिस में रिपोर्ट कर दी जाती है और देश के रक्षा के लिये रक्त बहाने वाले जवानों को सजा तक हो जाती है।

सत्तर साल पहले छद्म सेकुलरवाद के जो विषैले बीज बोये गये थे उनके जहरीले फल इस रूप में सामने आ रहे हैं। ❑

**चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः।।**

संसार में चंदन को शीतल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा चंदन से भी शीतल होता है। श्रेष्ठ मनुष्यों की संगति इन दोनों से बढ़कर शीतल (श्रेष्ठ) होती है, अतः व्यक्ति को सदैव अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए।

जब उन्होंने नारी का सम्मान करना सिखाया

नारी का सम्मान भगिनि निवेदिता की नजर में गुलामी से उबरने की पहली शर्त थी। यही सीख बातों ही बातों में उन्होंने कैसे प्रसिद्ध कवि सुब्रह्मण्यम भारती को दी पढ़िए प्रस्तुत संस्मरण में–

सुविख्यात तमिल कवि सुब्रह्मण्य भारती के जीवन पर भगिनि निवेदिता का विशेष प्रभाव पड़ा था। मात्र एक बार की भेंट ने उक्त कवि के जीवन में भगिनि निवेदिता ने देशप्रेम की अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी।

सन् १९०५ में कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने सुब्रह्मण्यम भारती कलकत्ता आये हुये थे। एक दिन वे भगिनि निवेदिता से भेंट करने गये। पहली मुलाकात में ही उनको लगा कि भगिनि निवेदिता के अन्दर एक महाशक्ति विराजमान है। वार्तालाप के समय भगिनि निवेदिता को पता लगा कि सुब्रह्मण्यम विवाहित हैं।

उन्होंने पूछा, *''पत्नी को साथ क्यों नहीं लाये हो?''*

भारती ने कहा, *'' हम लोगों के समाज में पत्नी को सभा में लाने की रीति नहीं है। ''*

यह बात सुनकर निवेदिता को अच्छा नहीं लगा। भारी दुःख के साथ उन्होंने कहा *''जो नारी को गुलाम के अलावा और कुछ नहीं समझते उनकी शिक्षा का क्या मूल्य है? ''*

> वेदान्त एवं वैज्ञानिक शिक्षा के समन्वय से ही आदर्श भारत वर्ष का पुनर्निर्माण होगा। वेदान्त मानव के अंतर्जीवन को सुन्दर बनाएगा तथा विज्ञान वहिर्जीवन को।

अपनी बात जारी रखते हुए भगिनि ने कहा,'' यदि तुम नारी जाति को अपने स्तर पर उन्नति नहीं करने दोगे तो इस देश का विकास संभव नहीं। आज से तुम अपनी पत्नी को अपने से अलग कुछ मत समझना। अपने हाथों को जिस प्रकार उठाते हो, उसे भी उसी प्रकार उठाकर रखना, उसे देवदूत समझकर उसकी स्तुति करना।''

भारती अभिभूत हो गये। भगिनि निवेदिता से क्षमा प्रार्थना की तथा प्रतिज्ञा की कि उनके आदेशों का पालन अक्षरशः करेंगे।

विदाई के समय भगिनि निवेदिता ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा, ***''वत्स, मन के अन्दर की सारी बाधाओं को दूर करो। लिंग, जाति, वर्ण, आदि बर्बर भेदों का त्याग करो। हृदय में प्रेम उत्पन्न करो। देखोगे, इतिहास के पृष्ठों में तुम दिव्य रूप से अंकित हो जाओगे।''***

भगिनि निवेदिता ने भारत को अपनी मातृभूमि माना था और भारत की आजादी को वे अपने जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य समझतीं थीं। इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी शक्तिशाली वाणी द्वारा न जाने कितने नवयुवकों को मातृभूमि को गुलामी की बेड़ियों से आजाद कराने के लिए प्रेरित किया।

–केदार चतुर्वेदी, *जयपुर*

आगामी पक्ष (१६ से ३० अप्रेल २०१८) के विशेष अवसर

(वैशाख कृष्ण अमावस्या से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तक)

जन्मदिवस

वैशाख शुक्ल १ (इस बार १६ अप्रेल)– दूसरे गुरु अंगददेव की जयंती (वि.१५६१, सन १५०४), १७ वें तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथ की जयंती

वैशाख शु. ३ (इस बार १८ अप्रेल)– परशुराम जयंती, संत बसवेश्वर जयंती

१९ अप्रेल (१८६४)– तपस्वी शिक्षाविद महात्मा हंसराज का जन्म दिवस

वैशाख शुक्ल ५ (इस बार २० अप्रेल)– आद्य शंकराचार्य जयंती, भक्त सूरदास जयंती

वैशाख शु.६ (इस बार २१ अप्रेल)– रामानुजाचार्य जयंती (युगाब्द ४११९,वि.१०७४)

२३ अप्रेल (१८५८)– विदुत्ता की प्रतिमूर्ति पण्डिता रमाबाई का जन्म दिवस

२९ अप्रेल (१८४८)– विश्वविख्यात चित्रकार राजा रवि वर्मा का जन्म दिवस

वैशाख शुक्ल १४ (इस बार २९ अप्रेल)– श्री नृसिंह जयन्ती,तीसरे गुरु अमरदास जी की जयंती (यु. ४५८१,वि.१५३६)

वैशाखी पूर्णिमा (इस बार ३० अप्रेल)– नवें अवतार भगवान बुद्ध की जयन्ती

पुण्यतिथि

१८ अप्रेल– तात्या टोपे का रूप धरे नारायण भागवत की शहादत (१८५९), दामोदर चाफेकर की शहादत (१८९८)

१९ अप्रेल १९१०– अनन्त लक्ष्मण कान्हरे की शहादत

२१ अप्रेल (१८५८)– क्रांतिकारी गणपतराय का बलिदान

२६ अप्रेल (१८५८)– वीर कुंवर सिंह की शहादत

३० अप्रेल (१८३७)– हरिसिंह नलवे की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनायें, दिवस

२१ अप्रेल (१९१३)– गदर पार्टी की स्थापना दिवस

वैशाख शुक्ल ७ (इस बार २२ अप्रेल)– विजय नगर साम्राज्य की स्थापना (सन् १३३६),**२२ अप्रेल –** विश्व पृथ्वी दिवस

२३ अप्रेल – विश्व पुस्तक दिवस

वैशाख शुक्ल १०(इस बार २५ अप्रेल)– तीर्थंकर महावीर को कैवल्य ज्ञान

जन्मदिवस वैशाख शुक्ल ५ (इस बार २० अप्रेल) पर विशेष

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार आद्य शंकराचार्य

इस पुण्यभूमि भारत में ऐसे अनेकों महापुरुषों ने जन्म लिया है जिन्होंने अपने अल्प जीवनकाल में ऐसे अद्‌भुत कार्य किए हैं जिनके सम्पूर्ण भारतवंशी अनंतकाल तक ऋणी रहेंगे। इन महापुरुषों में ईसा पूर्व छठी शताब्दी में जन्मे आचार्य शंकर का नाम सर्वोपरि है।

भारतवर्ष के केरल प्रान्त के कालड़ी ग्राम में नम्बूदरी ब्राह्मण द्विज चूड़ामणि शिवगुरु व विशिष्टा देवी के घर वैशाख शुक्ल तृतीया युगाब्द २५९४ (ईसा पूर्व ५०८) को भगवान चन्द्रमौलीश्वर के आशीर्वाद से पुत्र पैदा हुआ। शिवजी के आशीर्वाद से मिले पुत्र का नाम शंकर रखा गया। पांचवे वर्ष में पिता ने बालक का उपनयन संस्कार करने का निर्णय लिया किन्तु इस बीच वह चल बसे। माँ बालक को अपने पिता के यहाँ ले आई। पाँच वर्ष का होते ही बालक का उपनयन संस्कार करा उसे गुरु गृह भेज दिया गया। दो वर्ष में ही शंकर ने सभी शास्त्रों को कंठस्थ कर लिया। आठ वर्ष की आयु में शंकर सम्पूर्ण वेद वेदांगों का अध्ययन कर घर लौटा। मगधी, पाली, संस्कृत, मलयालम और प्राकृत भाषाओं पर उसका अधिकार हो गया।

मगर ने पैर पकड़ा–दैवज्ञ ब्राह्मणों ने बालक शंकर की कुण्डली देखकर कहा कि बालक अल्पायु है। आठवें एवं सोलहवें वर्ष में मृत्यु योग है जिसे देवेच्छा के बिना टाला नहीं जा सकता। यह सुन बालक शंकर ने सन्यास लेने का दृढ़ निश्चय किया । माँ इसके लिए अनुमति देने को तैयार नहीं थी। शंकर माता के साथ पूर्णा नदी में स्नान करने के लिये गए तो मगर ने उनका पैर पकड़ लिया। माँ के साथ सभी ने बचाने की कोशिश की पर बचता नजर नहीं आने पर शंकर ने चिल्लाकर कहा माँ मैं मर रहा हूँ, सन्यास की अनुमति दो वरना मेरी मुक्ति नहीं हो सकेगी। शंकर को मरते देख माँ बोली ' बेटा तुम सन्यासी हो जाओ।'' प्रसन्न हो शंकर ने मन ही मन संकल्प किया और सन्यास ग्रहण कर लिया। संकल्प होते ही मगर पैर छोड़ कर भाग गया। इसके बाद शंकर ने माँ को घर आकर वचन दिया कि अन्तिम काल में मुखाग्नि देने के लिए मैं उपस्थित रहूँगा। माँ के हाथ से काषाय वस्त्र, कौपीन, दण्ड, कमण्डल धारण कर सन्यासी का वेश बना बालक शंकर सद्‌गुरु की खोज में निकले।

दो माह चल कर नर्मदा नदी के तट ओंकारेश्वर की एक गुफा में शंकर ने गुरु गोविन्द पाद को अपना गुरु बनाया जो वहाँ वर्षों से समाधिस्थ थे और अपने शिष्य की प्रतीक्षा में थे। गुरु के सान्निध्य में आपने हठयोग, राजयोग और ज्ञानयोग की शिक्षा के साथ तीन वर्ष में गुरु से सारी शक्तियाँ प्राप्त कर ली। गुरु ने महासमाधि ली और शंकर को काशी जाने की आज्ञा दी। काशी में महादेव ने गंगा स्नान के लिये जाते वक्त चाण्डाल वेश में शंकर पर कृपा की और उन्हें देहाभिमान से मुक्त कराया।

चार साल में सारे ग्रन्थ लिखे – बारह वर्ष की आयु में शंकर ने ऋषिकेश होते हुए बदरीनाथ

> दुनिया में क्रांति और क्रांतिकारियों की बहुत बातें होती है लेकिन आचार्य शंकर जैसा क्रांतिकारी विश्व के इतिहास में कोई दूसरा नहीं हुआ। भारत में तो उत्कृष्ट क्रांतिकारियों की एक श्रेष्ठ परम्परा रही है। क्रांतिकारी वही है जो समाज की जड़ता,रूढ़िवादिता, असमानता और दासत्व-वृत्ति को मिटा कर श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की स्थापना करे।
>
> आचार्य शंकर के प्रादुर्भाव के समय बौद्ध सम्प्रदाय न केवल विकृति को प्राप्त हो गया, ठहरे पानी की सड़ांध उसमें उत्पन्न हो गई, बल्कि समाज और राष्ट्र से द्रोह व विश्वासघात की भूमिका में भी यह उस समय आ गया था।
>
> चुनौती बड़ी बेढब थी, किन्तु आचार्य शंकर ने अपने जीवन के छोटे से कालखण्ड में सम्पूर्ण परिस्थिति को बदल डाला। राष्ट्र जीवन में आये वैचारिक भ्रम और अकर्मण्यता मानो एक झटके से दूर हो गई और प्राचीन भारत के श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की ताजा बयार पूरे देश में बहने लगी। गहन अंधकार नष्ट हो गया तथा सनातन धर्म रूपी भुवन भास्कर की दिव्य किरणों ने पूरे राष्ट्र को आच्छादित कर दिया।

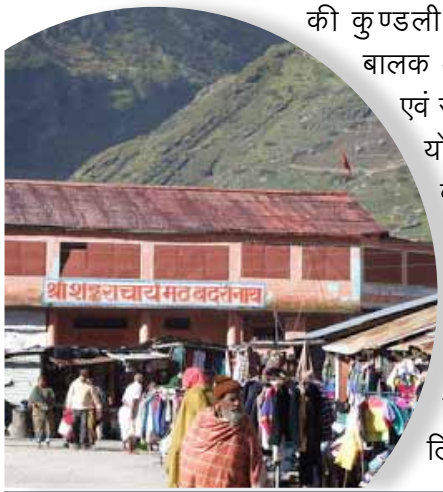

अलौकिक स्मरण शक्ति

केरल के शासक राजशेखर अच्छे साहित्यकार थे। आचार्य को उन्होंने अपने लिखे तीन नाटक सुनाए थे। आचार्य ने उनकी अनुपम नाट्य विधा तथा साहित्यिकता की प्रशंसा की थी। एक दिन वार्तालाप में शास्त्री प्रसंग आ गया तो आचार्य शंकर ने पूछा– *''राजन! आपकी साहित्य साधना आजकल कैसी चल रही है? क्या कोई नई पुस्तक लिखी है?''*

आचार्य का प्रश्न सुनकर निःश्वास छोड़ते हुए राजा ने उदास स्वर में कहा– *''नहीं देव आजकल मन खिन्न है, रचना में प्रवृत्त ही नहीं होता। एक दुर्घटना के बाद अब और पुस्तक लिखने का उत्साह ही नहीं रह गया है।''*

''कैसी दुर्घटना राजन्?'' आचार्य ने आश्चर्य से पूछा।

'' क्या बताऊँ आचार्य, मेरी वर्षों की साहित्य–साधना मिट्टी में मिल गई। तीनों नाटकों की पाण्डुलिपियाँ आग में स्वाहा हो गई। उसके बाद मेरा उत्साह ही जैसे ठण्डा हो गया।''

राजा की मनोवेदना कितनी गम्भीर थी यह आचार्य समझ गए। उन्होंने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा– *''आपके मन की पीड़ा मैं समझ गया। साहित्यकार के लिए उसकी कृति संतति के समान प्रिय होती है। ग्रन्थ उसके मानस–पुत्र ही तो हैं!''*

''आप सत्य कहते हैं आचार्य। ग्रन्थ मानस–सृष्टि होते हैं। सृजन का अपना एक सुख है। और उस सुख को सम्मुख रखने का मोह भी रहता ही है। मैं आपकी तरह योगी तो हूँ नहीं, उनके नष्ट होने की पीड़ा ने मुझे पस्त कर दिया है।''

आचार्य के मन में करुणा जागी। वे बोले– *''आपने तीनों नाटक मुझे पढ़कर सुनाए थे। वे मुझे इतने रुचिकर लगे कि सुनते समय ही मैंने उन्हें आद्योपान्त स्मरण कर लिया था। चलिए, उनका पुनरुद्धार करते हैं। लिपिक को बुलाइये।''*

राजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, पर अविश्वास का भी कोई कारण नहीं था। आचार्य नित्य निश्चित अवधि तक बोलते और लिपिक उसे लिपिबद्ध करता। इस प्रकार तीनों नाटक ग्रन्थ पुनः यथावत प्रकट हो गए। राजा को देखकर आश्चर्य हुआ कि उन ग्रन्थों व मूल में अल्प विराम तक का भी अन्तर नहीं था।

की यात्रा की। वहीं व्यास आश्रम में रहकर आपने ब्रह्मसूत्र, द्वादश उपनिषद, भगवद्गीता सहित सोलह ग्रंथों की भाष्य रचना चार साल में पूरी की। अब शंकर की आयु सोलह वर्ष की हो चुकी थी। तभी भगवान वेदव्यास ने आपको दर्शन दिए और आशीर्वाद दिया कि महादेव की कृपा से तुम बत्तीस वर्ष तक जिओगे क्योंकि अभी पृथ्वी पर तुम्हारा कार्य पूर्ण नहीं हुआ है।

शंकर ने कुमारिल भट्ट से प्रयाग में भेंट की जहां वह महाप्रस्थान की तैयारी में थे। आचार्य शंकर का शास्त्रार्थ का मन्तव्य जान उन्होंने अपने शिष्य मण्डन मिश्र के पास उन्हें जाने को कहा। ओंकारनाथ के निकट नर्मदा तट पर मण्डन मिश्र की पत्नी उमा भारती की अध्यक्षता में शास्त्रार्थ चलने लगा। शास्त्रार्थ के वक्त दोनों के गले में पुष्प माला डाल दी गई थी और भारती जी ने घोषणा की कि जिसके गले की माला म्लान हो जाएगी, पराजित माना जाएगा। अठारहवें दिन आचार्य शंकर की जीत हुई।

मण्डन मिश्र पराजित हुए और उन्होंने आचार्य का शिष्यत्व स्वीकार किया। माँ का अन्तिम समय जान कालड़ी में आकर आचार्य ने उनका अन्तिम संस्कार किया और वहाँ भुजंग स्तोत्र एवं विष्णु स्तोत्र की रचना की। माँ स्वर्ग सिधार गई।

चार कोनों में चार मठ – दो बार उन्होंने पूरे भारतवर्ष की पैदल परिक्रमा कर देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना की। उत्तर में बदरीनाथ, दक्षिण में श्रृंगेरी, पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारिका पीठ की स्थापना कर अपने शिष्यों को इन पीठों पर नियुक्त किया। बत्तीस वर्ष की अल्पायु में आचार्य शंकर ने देश की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित कर पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरो दिया। इस दौरान आपने जो भाष्य एवं स्तोत्रों की श्रृंखला भारतीय वाङ्गमय को दी वह पूरी मानवजाति के लिए एक अनूठी धरोहर है।

आपने केदार नाथ में समाधियोग द्वारा अपने पांचभौतिक शरीर का त्याग किया। ❑

विश्व के सबसे बड़े मन्दिर की रोमांचक यात्रा

वास्तव में सत्साहित्य ही व्यक्ति को संस्कारयुक्त, चरित्र सम्पन्न बनाता है एवं उसे अलौकिक आध्यात्मिक तथा सम्यक् सांसारिक दृष्टि प्रदान करना है। इसी उदात्त लक्ष्य को ध्यान में रखकर **अखिल भारतीय साहित्य परिषद**, 'साहित्य संवर्धन' यात्राओं का आयोजन करती है, जिससे साहित्यकारों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि प्राप्त हो, ताकि उनके द्वारा निर्मित साहित्य समाज का सम्यक् मार्गदर्शन कर उसे भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत करा सके।

इसी क्रम में २२ फरवरी से लेकर १ मार्च तक साहित्य परिषद ने कम्पूचिया (कंबोदिया) एवं श्याम देश(थाईलैंण्ड) की **साहित्य संवर्धन यात्रा** आयोजित की। परिषद के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्रीधर जी पराडकर एवं राष्ट्रीय महासचिव ऋषि कुमार मिश्रा के नेतृत्व में यह यात्रा सम्पन्न की गई। इसमें विविध भाषा-भाषी सत्रह साहित्यकारों ने सहभाग किया। राजस्थान क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में मुझे भी यात्रा में सम्मिलित होने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

डेढ़ सौ फुटबाल मैदानों जितना बड़ा – इस यात्रा में कम्पूचिया के विश्व प्रसिद्ध एवं दुनिया के सबसे बड़े हिन्दू मंदिर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो भगवान विष्णु का विशाल मंदिर है। इसका माप फुटबाल के १४० मैदानों के बराबर है। मंदिर की दीवारों पर दाएं रामायण के घटनाक्रम पत्थरों पर खुदे हुए हैं। इसी प्रकार बाएं भाग की दीवारों पर महाभारत के घटनाक्रमों के अत्यंत ही प्रभावकारी, सुंदर चित्रों का होना सुखद आश्चर्य प्रदान करता है। मंदिर की विशालता एवं भव्यता वास्वत में दर्शनीय है। सहस्त्र लिंग नाम के स्थान जो एक पहाड़ी पर स्थित है, पर नाग शैया पर शयन मुद्रा में भवगान विष्णु साथ में माता लक्ष्मी, भगवान ब्रह्मा, शिव की मूर्तियां अत्यंत ही रोमांच प्रदान करती हैं। वहीं पर एक हजार शिवलिंग एवं उनके बीच में द्वादश ज्योतिर्लिंगों का होना मन को सहज ही आश्चर्य में डालता है। अंकोरवाट जिसे मंदिरों का शहर कहते हैं, वहां भगवान शिव, सूर्य एवं भवगान विष्णु के मंदिर अपनी भव्यता एवं प्राचीनता के लिये विश्व विख्यात है। एक मंदिर के तोरण द्वार पर वानर राज बालि पर तीर संधान करते हुए भगवान राम का चित्र अति सुंदर है।

विमान तल का नाम सुवर्णभूमि– इसी प्रकार थाईलैण्ड के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम सुवर्णभूमि है। उसके प्रवेश द्वार के पास सागर मंथन दिखाती हुई विशाल प्रतिमा अत्यंत मनोहारी है। राजधानी बैंकाक में भगवान बुद्ध की ४६ मीटर लम्बी और १६ मीटर चौड़ी शयन मुद्रा में प्रतिमा तथा मंदिर के तोरण द्वार पर गरुड़ पर बैठे भगवान विष्णु का चित्र मन में सहसा विस्मय पैदा करता है। काली मां, हनुमान जी तथा शिव मंदिर भी अपने आप में विलक्षण हैं।

थाईलैण्ड में अभी दसवें राम राजा का शासन चल रहा है। स्थान-स्थान पर हिंदू संस्कृति की गहरी छाप सहज ही दिखाई दे जाती है।

– विपिन पाठक

(क्षेत्रीय संगठन मंत्री-अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान)

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश और संस्कृति के बारे में आप कितना जानते हैं?

१. हनुमान जी जब लंका जाने के लिये समुद्र लांघ रहे थे तो किस पर्वत ने उन्हें कुछ समय विश्राम करने को कहा?

२. महाबली भीम के शंख का क्या नाम था?

३. प्राचीन काल में वियेतनाम में किस देवता की पूजा सबसे अधिक होती थी?

४. कर्नाटक के हम्पी में भारत के किस विशाल और समृद्ध साम्राज्य की राजधानी के भग्नावशेष हैं?

५. एक कल्प लगभग ४४० करोड़ वर्ष का होता है। इस समय कौन सा कल्प चल रहा है?

६. साकेत (अयोध्या) के राजा चन्द्रगुप्त ने किस महान् राज-वंश की स्थापना की?

७. प्राचीन भारत में चिकित्सा-विज्ञान की शिक्षा कितने वर्षों में पूरी होती थी?

८. भारत को स्वतंत्र कराने के लिये अप्रेल १९१३ में अमरीका में किस क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की गई?

९. मेवाड़ के किस महाराणा की राजधानी चावण्ड थी?

१०. पूना में भगिनि निवेदिता किन क्रांतिकारियों की माता को सांत्वना देने गई थीं?

(उत्तर इसी अंक में हैं)

अन्न तो पूरे समाज का है

भारत के एक जाने-माने उद्योगपति कुछ समय पहले जर्मनी गये। उक्त उद्योगपति और उनके मित्र जर्मनी के बड़े नगर हैम्बर्ग में थे। भोजन करने के लिये वे एक रेस्तराँ में चले गये। वहाँ कई लोग भोजन कर रहे थे। एक मेज पर नौजवान पति-पत्नी थे जो बड़ा सादा भोजन कर रहे थे। उनके पास की मेज पर कुछ बड़ी उम्र की महिलाएं भोजन कर रहीं थीं। भारतीयों ने जम कर भोजन किया और काफी झूठा भी छोड़ दिया। बिल चुका कर वे जाने लगे तो महिलाओं ने उन्हें रोक लिया और अंग्रेजी में पूछा-

''आपने इतना झूठा क्यों छोड़ दिया?''

भारतीय ने उत्तर दिया-''हमने इसके पैसे दिये हैं, आपको हमारे झूठा छोड़ने से क्या लेना देना?''

यह उत्तर सुन कर महिलाओं का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। एक ने तुरंत किसी को मोबाइल से फोन किया। कुछ ही मिनिटों में दो वर्दीधारी लोग वहाँ आ गये। उन्होंने सारा मामला समझा और भारतीयों पर पचास यूरो (यूरोप की मुद्रा) का जुर्माना लगा दिया। जुर्माना वसूलने के बाद एक सुरक्षाकर्मी ने कहा,

'' इतना ही मँगाइये जितना आप खा सकें। माना कि आप पैसे दे रहे हैं, पर **खाद्य सामग्री जैसे संसाधन पूरे समाज के हैं।** बहुत से लोग अभाव में जीते हैं, इसलिये समाज के अन्न को व्यर्थ करने का आपको कोई अधिकार नहीं है।''

भारतीय संस्कृति भी यही सिखाती है कि,

यावत् भ्रियेत जठरम् तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकम् योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।

जितना हमारी उदरपूर्ति के लिये जरूरी है, उतने पर ही हमारा अधिकार है। इससे अधिक का जो उपयोग करता है वह चोर है और दण्ड पाने योग्य है।

अमर बलिदानी वीर खाज्या नायक एवं दौलतसिंह

मित्रों, भारत की स्वतंत्रता के लिए सन् १८५७ में महासंग्राम हुआ। इस महासंग्राम में लाखों क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों से संघर्ष करते हुए मातृभूमि के लिए बलिदान दिया। यह वह समय था जब देश के कोने-कोने से अंग्रेजों को खदेड़ने का बीड़ा देशभक्त नौजवान उठा चुके थे। ऐसे देशभक्तों में मध्यप्रदेश के वीर खाज्या नायक और दौलत सिंह नायक का नाम भी बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

वीर खाज्या अंग्रेजों की सेना में एक सामान्य सिपाही थे। उन्हें मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले की सेंधवा चौकी की निगरानी का काम सौंपा हुआ था। अंग्रेजों के दिनों-दिन भारतीयों पर बढ़ते अत्याचारों को देखकर खाज्या का मन बहुत व्यथित होता था। अतः उन्होंने फिरंगियों की नौकरी से त्याग पत्र देने का निश्चय किया।

नौकरी छोड़ने के पश्चात् वे देश को स्वतंत्र कराने की भावना लेकर क्रांतिकारी नेता भीमा नायक से मिले। भीमा नायक का मध्य प्रदेश के बड़वानी क्षेत्र में बड़ा प्रभाव था। यह भील वनवासी बहुल क्षेत्र था। इस क्षेत्र के लोग आर्थिक रूप से जरूर पिछड़े हुए थे परन्तु वीरता और स्वाभिमान इनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। भीमा नायक भी अंग्रेजों के बढ़ते हुए कदमों को रोकने के लिए प्रयासरत थे।

अब दोनों ने मिलकर वनवासियों को संगठित करना प्रारम्भ किया। इनके प्रयासों से धीरे-धीरे अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण तैयार होने लगा। वनवासियों के इस संगठित दल ने अंग्रेजों की चौकियों पर हमला कर खजाना लूटना प्रारम्भ कर दिया। वनवासियों के हमलों से परेशान होकर अंग्रेजों ने एक बड़ी सेना को इस क्षेत्र में तैनात कर दिया और इन्हें पकड़ने के प्रयास तीव्र कर दिये। छापामार युद्ध में पारंगत वनवासी हर बार हमला कर घने जंगलों के बीच गायब हो जाते और अंग्रेजों के सभी प्रयास धरे के धरे रह जाते।

आखिरकार परेशान होकर अंग्रेजों ने खाज्या एवं भीमा नायक का भेद बताने वाले को एक हजार रुपये इनाम देने की घोषणा की। इनाम घोषित होने पर भी दोनों देशभक्त डरे और रुके नहीं,वे लगातार लोगों को जाग्रत करते रहे। एक बार किसी भेदिये ने अंग्रेज अधिकारियों को आमल्यापानी गांव में खाज्या के होने की सूचना दे दी। अंग्रेज तो इसी मौके की तलाश में थे। वे दल-बल के साथ खाज्या को पकड़ने पहुँचे। ११ अप्रेल, १८५८ को अंग्रेज सैनिकों से गाँव के पास के मैदान में इस भील दल का आमना-सामना हुआ। अंग्रेज सेना अपनी पूरी तैयारी से आई थी जबकि वनवासियों के पास अपने परम्परागत हथियार तीर-कमान, बरछी, भाला ही थे। दिन भर दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ। इस लड़ाई में अंग्रेजों के अधिकतर सिपाही मारे जा चुके थे। बहादुरी के साथ लड़ते हुए इस समर में वीर खाज्या नायक अपने पुत्र दौलत सिंह सहित बलिदान हुये।

आज भी मध्य प्रदेश का सम्पूर्ण निमाड़ क्षेत्र इन वीरों को श्रद्धा के साथ याद करता है जिन्होंने राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिये अपने प्राणों की बलि दे दी। ❑

आज तो हमारे पास नारियल हैं ही नहीं

दिल्ली के चादंनी चौक के थानेदार रामपाल सिंह ने लाला जी को हाथ में एक भारी सा थैला लटकाये और नंगे पाँव जाते हुए देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । वह जानता था कि लाला जी दिल्ली के एक बड़े रईस हैं। वह उनकी विशालकाय हवेली में कई बार जा चुका था तथा कई दावतों में भी शमिल हो चुका था। थाने के सामने से निकलते हुए लालाजी को उसने हाथ जोड़कर नमस्कार की। फिर पूछा–

''कहिये लालाजी! आज क्या हुआ जो इतना वजनदार थैला लटकाये पैदल चले जा रहे हैं। क्या थैले में सोना–चाँदी भर रखा है?''

लालाजी के साथ एक व्यक्ति और था। उसके हाथ में भी वैसा ही वजनदार थैला था। दोनों रुक गये। लालाजी ने थानेदार के नमस्कार का जवाब देते हुए कहा–

''बात यह है दरोगा जी कि हमारे घर सत्यनारायण की कथा होने वाली है। श्रीमती जी का आदेश हुआ कि प्रसाद में सबको एक–एक नारियल दिय जाये। हम लोग थैलों में नारियल ही ले जा रहे हैं। शास्त्रों में लिखा है कि प्रसाद खुद कथा कराने वाले को नंगे पाँव जाकर ही लाना चहिये, इसलिये नंगे पाँव ही नारियल ले जा रहे हैं।''

''अच्छा लालाजी! कुछ चाय–शरबत तो पीते जाइये। कभी–कभी हम जैसे लोगों को भी कृतार्थ कर दिया कीजिये''– थानेदार ने कहा।

लाला जी पहले तो थोड़ा हिचकिचाये, फिर थानेदार के आग्रह पर थाने में रखी कुर्सियों पर बैठ गये। थाने के सिपाही दो गिलासों में पानी ले आये। पानी पीकर लाला जी ने अपने साथी का परिचय कराया– *''ये हैं श्री बलराज जी। इनके पिता महात्मा हंसराज को तो आप जानते ही होंगे?''*

थानेदार फिर हाथ जोड़ते हुए बोला– *''भला दिल्ली में रह कर महात्मा हंसराज को न जाने यह कैसे हो सकता है? आज आप की कृपा से इनसे भी परिचय हो गया। अब बताइये चाय मंगाऊ या शरबत?''*

''दरोगा जी! पूजा के पहले इस समय तो हम कुछ भी नहीं ले सकते। फिर कभी आयेंगे और चाय के साथ नाश्ते का भी आनन्द लेंगे।'' यह कहते हुए लालाजी उठ खड़े हुए और थानेदार का अभिवादन स्वीकार कर चल पड़े।

कुछ दूर जाने के बाद उन्होंने बलराज से कहा–'' कहो बलराज! अगर थानेदार कहीं थैलों में एकाध नारियल लेने के लिए हाथ डाल देता तो क्या होता?''

''होता क्या, हम लोग एक 'बड़ा नारियल' उसी को मारते और भाग खड़े होते।''

वास्तव में उन थैलों में नारियलों के नीचे दो–दो बम और उन्हें ले जाने वाले लाला जी थे– दिल्ली के बहुत बड़े व्यापारी लाला हनुमन्त सहाय। यह घटना थी सन् १९१२ की। कुछ दिनों बाद अंग्रेज वायसराय लार्ड हार्डिंग की दिल्ली में सवारी निकलने वाली थी। विख्यात क्रांतिकारी रास बिहारी बोस ने उसी समय वायसराय पर बम फैंकने की योजना बनाई थी। थैलों में बम उसी के लिये ले जा रहे थे।

मास्टर अमीरचन्द और अवध बिहारी के सम्पर्क में आ कर लालाजी क्रांतिकारी बन गये थे। वैसे भी वे सामाजिक कार्यों में दान देते थे। क्रांतिकारी दल के सदस्य बन जाने के बाद तो उनका सारा पैसा देश के काम में लगने लगा। एक बार अवध बिहारी ने उनसे पूछा *''लालाजी! आप क्रांतिकारी आन्दोलन में अपना सारा धन खर्च कर रहे हैं। यह भी तो सोचिये कि आपका भरा–पूरा परिवार है बड़ी जिम्मेदारियाँ भी हैं।''*

इस पर लाला जी ने उत्तर दिया– ***''देखो, पैसा इसलिए कमाया जाता है कि वह खर्च किया जाये। अगर पैसा देश और समाज तथा आजादी के प्रयत्नों में खर्च किया जाए तो धन का इससे अच्छा उपयोग और क्या हो सकता है। अरे भाई, हम लोगों के प्रेरणा स्रोत तो हमारे पूर्वज भामाशाह हैं, जिन्होंने अपनी कई पीढ़ियों का धन देश की आजादी के लिये महाराणा प्रताप के चरणों में रख दिया था।''***

रासूदा (रास बिहारी बोस) की योजना सफल हुई। बसन्त कुमार विश्वास ने २३ दिसम्बर १९१२ को हाथी पर सवार वायसराय पर चाँदनी चौक में बम फैंक दिया। अफरा–तफरी में रासूदा तथा बसन्त कुमार दोनों ही घटना–स्थल से सुरक्षित निकल गये। भाग्य से वायसराय तो बच गया पर अंगरक्षक मारा गया। तो भी ब्रिटिश शासन की नाक तो दुनिया भर में कट गई। अब धर–पकड़ शुरु हो गई दुर्भाग्य से इस मामले में भी क्रांतिकारी दल का ही एक सदस्य कमजोर पड़ गया। उसने सारा भेद खोल दिया। फलस्वरूप मास्टर अमीरचन्द, अवध बिहारी, भाई बालमुकुन्द, बसन्त कुमार विश्वास, बलराज तथा लालाजी पकड़े गये। रासूदा पुलिस को छका कर गायब हो गये।

लालाजी को गिरफ्तार करने के लिये वही थानेदार रामपाल सिंह जब लालाजी की हवेली पर पहुँचा तो विनोद में लालाजी ने कहा *'' दरोगा जी उस दिन तो हम लोग 'नारियल' लेकर खुद ही थाने पहुँच गये थे। उस दिन तो आपने नारियलों की फरमाइश की ही नहीं। आज आप आये हैं तो हमारे पास नारियल ही नहीं हैं।''*

लालाजी तथा बलराज को इस मामले में सात साल की सजा हुई तथा अन्य क्रांतिकारियों को फांसी की सजा हुई। अम्बाला जेल में अमीरचन्द, अवध बिहारी, भाई बालमुकुन्द तथा बसन्त कुमार विश्वास ११ मई १९१५ को मातृभूमि की आजादी के लिये शहीद हो गये। ❑

अन्तःकरण की शुद्धि पूजा और ध्यान

पूजा तथा ध्यान करना हिन्दू संस्कृति तथा धर्म शास्त्रों में महत्वपूर्ण माना गया है। इससे हमारे मन तथा अन्तःकरण की शुद्धि होती है, हमारा अन्य मनुष्यों, जीवों तथा प्रकृति के साथ व्यवहार में सुधार होता है और अन्ततः मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। मन को संयत-शान्त (एकाग्र) करने तथा इन्द्रिय निग्रह के लिए हमारे शास्त्रों में ध्यान को उपयोगी बताया है। हमारी इन्द्रियां सांसारिक वस्तुओं के सम्पर्क में आती हैं जिससे व्यक्ति के मस्तिष्क में निरन्तर विचारों का प्रवाह (संकल्प-विकल्प) चलता रहता है जो इच्छाओं/कामनाओं का रूप लेती है। मानव शरीर में विवेक/बुद्धि उन विचारों पर निर्णय लेती है। यदि विचार प्रवाह प्रबल हो तो बुद्धि पर मन भारी पड़ता है तथा उचित/अनुचित कर्म का निर्णय बुद्धि के स्थान पर मन करता है। अर्थात बुद्धि मन की अनुगामी/सहायक हो जाती है। शास्त्रों में इसका उदाहरण भी दिया गया है जिसमें बताया गया है कि दीपक की लौ (अग्नि) को हवा बुझा सकती है लेकिन वही हवा जंगल में लगी आग (प्रबल) की सहायता करती है। अतः सभी को प्रतिदिन ध्यान अवश्य करना चाहिए।

पूजा विधि

- प्रत्येक परिवार में पूजा प्रतिदिन होनी चाहिये। अपने इष्ट, आराध्य देव की पूजा नित्य करनी चाहिये।
- नित्य कर्म से निवृत्त हो, स्नान करने के बाद पहला कार्य पूजा होना चाहिये।
- एकाग्र चित्त होकर शुद्ध मन से पूजा करनी चाहिये। स्थान शुद्धि के साथ-साथ पात्र शुद्धि, पूजा द्रव्यों की शुद्धि तथा पूजा द्रव्यों यथा हल्दी, कुकुंम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि की उपलब्धि सुनिश्चित करनी चाहिए।
- **आजकल परिवार के लोगों की दिनचर्या अलग अलग हो सकती है। अतः उनके द्वारा पूजा भी अलग-अलग समय की जा सकती है। फिर भी प्रयास हो कि परिवार के अधिकतम सदस्य मिल कर पूजा करें। संध्या पूजा आरती तो मिलकर ही करनी चाहिये।**
- हमारे प्रभु वेद प्रिय, नाद प्रिय तथा भक्ति प्रिय हैं अतः उपलब्ध घंटा, शंख, ताल आदि मंगल वाद्यों का प्रयोग पूजा के समय करना चाहिए।
- वर्ष में एक बार विशेष पूजा का आयोजन भी करना चाहिये । यह अवसर उत्सव-पर्व, तीज-त्योहार,जन्मदिन, विवाह-वर्षगांठ भी हो सकती है। उस दिन रिश्तेदार, बंधु, मित्र, पड़ौसी, सहयोगी आदि को पूजा में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित करना चाहिए।
- पूजा पूर्ण होने के उपरान्त उपयोग में ली गई सामग्री को ऐसे स्थान पर या पेड़ के नीचे डालना चाहिए जहां उन्हें कोई पैरों तले रौंद न सके।

ध्यान विधि

- ध्यान करने की जगह साफ-सुथरी, हवादार लेकिन एकान्त में होनी चाहिए।
- ध्यान वाले स्थान पर चटाई, तथा कपड़े का आसन बिछाकर उस पर सुखासन अथवा पद्मासन में सीधे बैठना चाहिए।
- हल्के से आंखें मूंद कर, पूरे मन को सांसों पर केन्द्रीकृत करते हुए, श्वासोच्छावासों का अवलोकन करते हुए अन्तर्मुखी बनना चाहिए।
- मन तथा अन्तःकरण दोनों नियन्त्रण में (स्थिर)रहने चाहिए।
- ईश्वर के नाम, रूप, मंत्र, गुण पर ध्यान लगाना चाहिए। नाम ध्यान में ईश्वर (अपने इष्ट) का एक नाम या मंत्र का बार-बार मन ही मन में उनका स्मरण किया जाता है। इसी प्रकार रूप ध्यान में ईश्वर के साकार रूप अथवा गुणों की कल्पना करते हुए, निरन्तर उसी का स्मरण करना चाहिए।
- शुरुआत में चंचल मन को अधिक समय तक एकाग्र करना मुश्किल होगा, अतः २-३ मिनट ध्यान लगावें। अभ्यास के साथ इसमें आनन्द मिलेगा और ध्यान का समय बढ़ाया जा सकता है।

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर तथा गुरु ग्रन्थ साहिब के निर्माता
पाँचवे गुरु अर्जुनदेव जी
वैशाख कृ. ७ (७ अप्रेल)

(१५६३-१६०६)

क्रांतिकारी समाज सुधारक
महात्मा ज्योतिबा फुले
११ अप्रेल

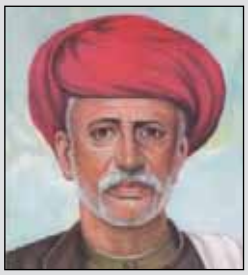

(१८२७-१८९०)

प्रखर राष्ट्रवादी एवं सामाजिक समरसता के अग्रदूत
बाबा साहेब अम्बेडकर
१४ अप्रेल

(१८९१-१९५६)

समाज से अस्पृश्यता समाप्त करने के लिये लंगर प्रथा प्रारम्भ करने वाले
तीसरे गुरु अंगददेव जी
वैशाख शु.१ (१६अप्रेल)

(१५०४-१५५२)

विश्व के कल्याण का मार्ग भारत दिखाए इसके लिये

इस वैचारिक महाभारत को फतह करना होगा

महाभारत की कथा पढ़ते समय कई बार लगता है कि कौरवों के पक्ष में कैसे पाण्डवों से चार अक्षोहिणी अधिक सेना जुट गई। दुर्योधन महाधूर्त था, पाण्डवों को मारने का बार-बार उसने प्रयास किया, राज दरबार में महासती द्रौपदी का अपमान किया, पाण्डवों को धोखे से चौपड़ के खेल में हराया, उन्हें जंगलों में भेज दिया और वनवास की अवधि पूरी होने के बाद उनको पाँच गाँव तो क्या सूई की नोक बराबर भूमि भी देने को तैयार नहीं हुआ। इतना अनाचार, अत्याचार, धोखाधड़ी करने के बाद भी उसके पक्ष में भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, शल्य आदि के साथ-साथ ग्यारह अक्षोहिणी सेना भी हो गई और पाण्डवों के पक्ष में सात अक्षोहिणी सेना ही जुट पाई। अर्थात् जम्बूद्वीप के साठ प्रतिशत से अधिक लोग कौरवों को ठीक मानते थे, अधर्म को ठीक मानते थे।

> ***रिलीजन को अफीम मानने वाले तथा मूर्ति-पूजा के विरोधी कामरेड़ों ने खुद पूजा के लिये लेनिन-स्तालिन की मूर्तियाँ खड़ी कर दीं। इनको गिरा देने पर कामरेडों को उतना ही कष्ट हुआ जितना मंदिरों के विध्वंस पर हिन्दू समाज को हुआ***

यह चिन्ताजनक स्थिति ईरान से कम्पूचिया तक फैले भारत की थी इसीलिये योगेश्वर श्रीकृष्ण को धर्म-अधर्म का अन्तर स्पष्ट करते हुए धर्म की स्थापना करनी पड़ी और वैचारिक संभ्रम में पड़े लोगों का संहार करवाना पड़ा। श्रीकृष्ण को अवतार इसीलिये कहा गया। लेकिन उनका काम कितना कठिन था इसकी कल्पना आज के भारत की स्थिति को देख कर की जा सकती है।

नये मूर्ति-पूजक

कुछ समय पहले उत्तर-पूर्व के तीन राज्यों, नागालैण्ड, मेघालय और त्रिपुरा में चुनाव हुए। त्रिपुरा में वाममार्गी चारों खाने चित्त हो गये। वहाँ का जनता ने कामरेड़ों की तानाशाही से मुक्ति पाई, तो खुशी के आवेग में कुछ लोगों ने लेनिन और स्तालिन के बुत गिरा दिये। हिन्दू समाज कभी भी मूर्ति भंजक नहीं रहा। ईसाइयत, इस्लाम, साम्यवाद, पारसी, यहूदी आदि सभी रिलीजनों को स्वतंत्रता के साथ अपने हिसाब से चलने की पूरी छूट देने वाला एकमात्र देश भारत ही है। इसलिये लेनिन-स्तालिन के पत्थर के पुतले गिराने का कोई समर्थन भी नहीं करेगा।

लेकिन हैरानी की बात है कि रिलीजन को अफीम मानने वाले तथा हर प्रकार की पूजा के सैद्धान्तिक विरोधी कामरेड़ों ने खुद पूजा करने के लिये मूर्तियाँ खड़ी कर दीं। यह तो बड़ी भारी मूर्ति पूजा है। उधर त्रिपुरा की जनता ने दो-चार बुत गिरा दिये तो पूरे देश में तहलका मच गया। कामरेडों में मानो नई जान आ गई। आनन-फानन में गम्भीर चेहरे बनाये वाममार्गियों ने विरोध-जुलूस निकाल दिये। बयानों की बाढ़ आ गई और प्रतिक्रिया में अन्य नेताओं की मूर्तियों का भंजन शुरु हो गया। ध्यान रहे कि साम्यवाद के पतन के बाद रूस में तो लेनिन-स्तालिन के सारे बुत जनता ने उखाड़ फेंके थे। २५ मार्च के अंग्रेजी दैनिक **डीएनए** में अनन्त कार्तिकेयन ने एक लेख में बताया है कि स्तालिन ने रूस में रह रहे सभी भारतीय कम्यूनिस्टों की हत्या करवा दी थी।

फिर भी कामरेड भारत के नये मूर्ति-पूजक बन कर स्तालिन, लेनिन के बुतों को पूज रहे हैं। पूजने के लिये कोई भारतीय नायक बेचारे वाममागियों को दिखाई नहीं देता।

भारत को खण्डित करने की आजादी

सेकुलर-नक्सल-लिबरल गठजोड़ ने भी भारी भ्रम फैला रखा है और महाभारत काल की तरह बहुत बड़ी संख्या में लोग इस भ्रम-जाल में फँसे भी हुए हैं। उक्त गठजोड़ के कुछ लोग '**आजादी**' की रट लगा रहे हैं। भारत के हजार टुकड़े करने की इच्छा पर रोक लगाना क्या आजादी का हनन है? सेकुलर गठजोड़ के लिये आजादी का अर्थ है अमर्यादित आचरण और अराजकता। आतंकियों पर कड़ी कार्रवाई हो तो उनकी आजादी छिन जाती है। नक्सलवादियों को पकड़ो तो 'आजादी पर हमला' हो जाता है और रोहिंग्या घुसपैठियों को निकालने की बात करो तो आजादी पर हमला मान लिया जाता है।

यह स्थिति इस समय अपने देश की है। मीडिया की स्थिति और भी अधिक विचित्र है। केरल या कर्नाटक में किसी स्वयंसेवक की हत्या हो जाती है, तो मीडिया के कान पर जूं नहीं रेंगती और त्रिपुरा में लेनिन के दो बुत गिरा दिये गये तो हड़कम्प मच गया। आतंकी हमले में सेना के जवान मारे जायें तो मामूली घटना और आतंकी मारा जाये तो सेना पर आरोपों की बौछार हो जाती है। पत्थरबाज को जीप से बाँध दिया जाये तो मानवाधिकारों पर चोट और सेना-पुलिस के जवान मारे जायें तो विशेष बात नहीं। तथाकथित आजादी के ये रखवाले चाहते हैं कि भारत की जनता अफजल गुरु जैसे फाँसी पाये आतंकियों के शहादत दिवस मनाये, महिषासुर को महापुरुष माने और नक्सली हमलों में सुरक्षा बलों के जवानों के मारे जाने पर खुशी मनाये।

इन मनजीवड़ों के समर्थक भी कम नहीं हैं। कई राजनैतिक दलों के अध्यक्ष, महासचिव बाहें चढ़ाते हुए आजादी के पाखण्डी रखवालों की पीठ थपथपाने चले जाते हैं।

इसलिये इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि दुर्योधन और दुःशासन के पक्ष में इतने सारे लोग कैसे खड़े हो गये। असत्य के मार्ग पर चलना आसान है और सत्य की डगर पर पैर रखना कठिन है। कम लोग ही सत्य के साथ खड़े होते हैं, लेकिन जो दृढ़ता से खड़े रहते हैं उनमें युग-परिवर्तन की क्षमता पैदा हो जाती है। अतः वर्तमान में चल रहे वैचारिक महाभारत को हमें फतह करना होगा, तभी भारत विश्व-गुरु बन सकेगा। ❑

मोटे शरीर वाला ताकतवर नहीं होता

गणेश शंकर विद्यार्थी प्रसिद्ध क्रांतिकारी और अपने समय के जाने-माने पत्रकार थे। वे राष्ट्रीय एकता और आम आदमी के हितों के लिए हमेशा संघर्ष करते रहे। दिखने में शरीर से दुबले-पतले थे, मगर आत्मविश्वास और साहस उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। जिन दिनों वे कानपुर में थे उन दिनों वहां कुछ शरारती लोग आपस में एक-दूसरे को लड़ाकर शहर का वातावरण बिगाड़ने पर लगे थे। शहर के हालात से गणेश शंकर विद्यार्थी बेहद परेशान थे। वे किसी भी प्रकार से शहर में शांति स्थापित करना चाहते थे। अतः उन्होंने दंगा-फसाद करने वालों को सबक सिखाने की ठानी।

एक दिन वे लोगों को शांत कराते हुए जनरलगंज की ओर निकल गये। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि पहलवान जैसा दिखने वाला एक आदमी जूतों की दुकान को लूट रहा था। वह जूतों को एक बोरे में भर रहा था और दुकानदार उसके सामने हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा था।

यह देखकर गणेश विद्यार्थी जोर से बोले- *''ठहरो!''* वहां कई आदमी खड़े थे। वे यह देखकर हैरान रह गये कि एक दुबला-पतला व्यक्ति भीमकाय बदमाश को ललकार रहा है। बदमाश विद्यार्थी जी की ओर लपका तो वे उसको दुत्कारते हुए बोले- *''तुम्हें शर्म नहीं आती? दुकान का माल मुफ्त का है क्या? इतने तगड़े आदमी होकर सेवा या मदद तो कर नहीं रहें, उल्टे दूसरों को लूट रहो हो।''* बदमाश यह सुनकर शर्म से पानी-पानी हो गया और सारा सामान छोड़कर वहां से चम्पत हो गया ।

उसके जाने के बाद लोग विद्यार्थी जी से बोले- *''वह आदमी आपसे तगड़ा था,आपको उससे डर नहीं लगा?''*

विद्यार्थी जी बोले- *'' वह तगड़ा कहां था। सिर्फ शरीर से तगड़े को मैं तगड़ा नहीं मानता। वह मन से दुर्बल था, तभी तो गलत काम कर रहा था। गलत काम करने वाला शरीर से भले ही मजबूत हो, मन से बहुत कमजोर होता है। यदि हम मनुष्य होकर भी दया,धर्म, सहयोग, प्रेम से दूर भागते हैं तो मनुष्य होने का क्या अर्थ रह जाता है?''*

उनकी बात सुनकर वहां उपस्थित सभी लोग अपने आप पर शर्मिंदा थे।

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं ?

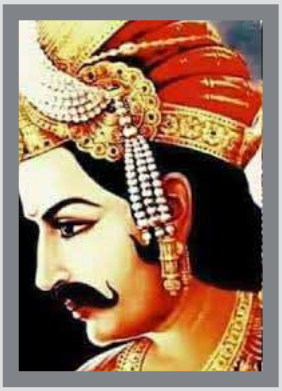

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- आप शुंग वंश के संस्थापक एवं मगध के सम्राट थे।

- इन्होंने कलिंग नरेश खारवेल को साथ ले आक्रमणकारी कुषाणों को भारत से निकाला।

- पूरे भारत को फिर से संगठित और शक्तिशाली बनाने वाले।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों, अपने देश में ११ नदियों को पवित्र माना गया है। ये हैं गंगा, सरस्वती, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, गण्डकी, कावेरी, यमुना, नर्मदा, कृष्णा, गोदावरी तथा महानदी। नीचे इन्हीं पवित्र नदियों से सम्बन्धित दस प्रश्न दिये गये हैं। दिये गये चार सम्भावित उत्तरों में से आपको सही उत्तर का चुनाव करना है।

१. भागीरथी किस पवित्र नदी का एक और नाम है ?
(अ) गोदावरी (ब) यमुना (स) गंगा (द) कावेरी

२. किस पवित्र नदी को दक्षिण की गंगा कहा जाता है ?
(अ) गोदावरी (ब) महानदी (स) कृष्णा (द) कावेरी

३. कैलाश-मानसरोवर से निकल कर लेह में कौन सी पवित्र नदी वर्तमान भारत में प्रवेश करती है ?
(अ) ब्रह्मपुत्र (ब) सिन्धु (स) गण्डकी (द) नर्मदा

४. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग किस नदी के तट पर स्थित है ?
(अ) यमुना (ब) कावेरी (स) नर्मदा (द) गोदावरी

५. श्रीकृष्ण ने बाल लीला किस नदी के तट पर की थी ?
(अ) गंगा (ब) मंदाकिनी (स) यमुना (द) अलकनंदा

६. नासिक किस नदी के तट पर स्थित है ?
(अ) गोदावरी (ब) गंगा (स) नर्मदा (द) चंबल

७. किस नदी को भगवान शिव शंकर ने अपनी जटाओं में धारण किया ?
(अ) गंगा (ब) यमुना (स) सरस्वती (द) सरयू

८. किस नदी का एक नाम रेवा भी है ?
(अ) नर्मदा (ब) यमुना (स) सरस्वती (द) कावेरी

९. कौन सी पवित्र नदी उड़ीसा में प्रवाहमान होते हुए कटक के पास सागर में मिल जाती है ?
(अ) इरावती (ब) महानदी (स) गोदावरी (द) कृष्णा

१०. अयोध्या किस नदी के तट पर स्थित है ?
(अ) अलकनंदा (ब) मंदाकिनी (स) सरयू (द) गंगा

(उत्तर इसी अंक में हैं)

कुशोक बकुला जन्मशताब्दी यात्रा प्रारम्भ

पाक–अधिकृत कश्मीर भारत का अभिन्न अंग – भागवत जी

स्वतंत्रता मिलने के बाद पाकिस्तान ने जम्मू–कश्मीर पर अचानक आक्रमण कर दिया था और जिहादी सेना श्रीनगर के पास पहुँच गई। उस संकटपूर्ण स्थिति में संघ के स्वयंसेवकों ने श्रीनगर के हवाई अड्डे की रातों–रात मरम्मत कर उसे हवाई जहाजों के उतरने लायक बनाया। तत्पश्चात भारतीय सेना विमानों से श्रीनगर पहुँची और जिहादियों को खदेड़ना शुरु कर दिया। आगे बढ़ते जवानों के पैर राजनीति ने रोक दिये। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने युद्ध बन्द करने की घोषणा कर दी और एक तिहाई कश्मीर पाकिस्तान के कब्जे में ही रह गया।

भारत की संसद एक मत से पाक अधिकृत कश्मीर को मुक्त कराने का संकल्प ले चुकी है। सरसंघचालक भागवत जी ने भी गत १४ मार्च को नागपुर में उक्त संकल्प को दोहराया और कहा कि पाकअ.क. भारत का अभिन्न अंग है। नागपुर में चार दिनों के 'जम्मू–कश्मीर–लद्दाख महोत्सव' का शुभारम्भ करते हुए उन्होंने उक्त विचार प्रकट किये। उन्होंने कहा कि सचाई को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। पर कभी–कभी ताकत से सच बोलना पड़ता है, तभी समझ में आता है।

भागवत जी ने उन्नीसवें **लामा कुशोक बकुला** की जन्म–शताब्दी के अवसर पर निकाली जा रही यात्रा को भी वेद–मंत्रों की ध्वनि के बीच हरी झण्डी दिखाई। नागपुर से देश की चारों दिशाओं में जाने वाली यात्राएं आगामी १९ मई को समाप्त होंगी। लामा कुशोक बकुला ने लद्दाख को भारत भूमि से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे सांसद, विधायक एवं राज्य सरकार में मंत्री भी रहे।

गरीब अंग्रेजों को खाना दे रहे हैं लंदन के भारतीय

अंग्रेजों ने लगभग दो सौ सालों तक भारत को जम कर लूटा। सोने की चिड़िया भारत को कंगाल बनाने में कोई कसर उन्होंने नहीं छोड़ी। सन् १९४७ में भी धूर्त अंग्रेजों ने भारत का विभाजन करके ही दम लिया। भारत को पिछड़ा, सपेरों का देश, अंध विश्वासी तथा अज्ञानी सिद्ध करने में उन्होंने पूरा जोर लगाया। वेदों को गड़रियों के गीत तक गोरों ने बता दिया।

लेकिन अब तक उल्टा चलने वाला चक्र अब सीधा चलने लगा है। भारत महाशक्ति बन रहा है और इंगलैण्ड सिकुड़ रहा है। स्काटलैण्ड तो मामूली अंतर से अलग देश बनने से रह गया लेकिन भविष्य में कभी भी अलग हो सकता है। वेल्स और उत्तरी आयरलैण्ड भी कभी भी अलग हो सकते हैं।

'टाइम्स ऑफ इण्डिया' (१४ मार्च) के अनुसार इंगलैण्ड के पाँच लाख बच्चे भूखे स्कूल जाते हैं। दो जून का भोजन जिन्हें नहीं मिलता ऐसे लोगों की संख्या भी काफी है। वहाँ रहने वाले भारतीयों ने अब भूखे बच्चों और भूखे लोगों का पेट भरने का प्रकल्प लंदन में शुरु किया है। अभी दो हजार बालकों और वंचितों को भोजन कराया जा रहा है। शीघ्र ही चालीस हजार बालकों व गरीबों तक योजना का लाभ पहुँचाया जायेगा।

हंगरी के लेखक इमरे बर्न ने बताया

चौहानों के वंशज हैं हंगरी के मूल निवासी

हंगरी पूर्वी यूरोप का एक देश है तथा तीस साल पहले तक वहाँ साम्यवादियों की तानाशाही थी। वर्ष १९९० में अत्याचारी कामरेडों के पंजों से छूटने के बाद हंगरी का भी स्वाभिमान जाग्रत हुआ और वे अपनी जड़ें खोजने लगे। अपना पूर्व इतिहास जानने के लिए वहाँ के इतिहासकार तथा लेखक कोवाक इमरे बर्न मार्च के तीसरे सप्ताह में जयपुर आये। पत्रकारों को उन्होंने बताया कि हंगरी के लोग भारत के, विशेष कर शाकम्भरी के चौहानों के वंशज हैं।

हंगरी की राजधानी बूडापेस्ट के प्रमुख चौराहे पर एक घुड़सवार की मूर्ति लगी है, जिसके हाथ में भाला है। मूर्ति सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जैसी है। श्री बर्न ने सांभर से कुछ दूरी पर स्थित शाकम्भरी माता के दर्शन भी किये। शाकम्भरी यात्रा के बाद श्री बर्न ने बताया कि इस मंदिर और हंगरी में स्थित मंदिरों में अद्भुत समानता है। उन्होंने हंगरी और भारत के लोगों के बीच की और भी कई एक जैसी बातें भी बताईं।

स्टीफन हाकिंग ने कहा था

वेदों में आइंस्टीन से आगे का भी ज्ञान है

महान वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग का गत १४ मार्च को निधन हो गया। उनका अधिकांश जीवन व्हील–चेयर पर बैठे–बैठे ही निकला। दिव्यांग एवं शारीरिक रूप से अक्षम होने के बाद भी वे आधुनिक काल के अग्रणी वैज्ञानिकों में गिने गये। उन्होंने कहा था कि वेदों में आइंस्टीन के प्रसिद्ध सापेक्षवाद से आगे का भी ज्ञान मिलता है। केन्द्र सरकार में विज्ञान और तकनीक मंत्री डा.हर्षवर्धन ने बीते १६ मार्च को मणिपुर की राजधानी इम्फाल में उक्त जानकारी दी। वे इम्फाल में प्रारम्भ हुई १०५ वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन सत्र में वैज्ञानिकों को सम्बोधित कर रहे थे।

डा.स्टीफन हाकिंग ने सचाई को ही प्रकट किया था। सापेक्षवाद का सिद्धान्त खोजने वाले आइंस्टीन ने भी वेदों को ज्ञान–विज्ञान का भण्डार माना था। यूरोप के वैज्ञानिकों के ऋग्वेद का अध्ययन करने के प्रमाण हैं तथा आधुनिक काल की कई नई खोजें उसी का परिणाम थीं। परमाणु–बम बनाने वाले भौतिक शास्त्री डा.ओपन हाइमर ने परमाणु–विज्ञान को वेदों की देन बताया था।

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी – *मैनाक, पौण्ड्र, शिव जी, विजयनगर साम्राज्य, श्वेतवाराह, गुप्त वंश, छह वर्ष, गदर पार्टी, महाराणा प्रताप, चाफेकर बन्धु*

काशी विश्वनाथ मंदिर के नीचे सुरंग खोद दी जिहादियों ने

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश का प्रशासन उस समय भौचक्का रह गया जब प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मन्दिर के नीचे एक सुरंग पकड़ में आई। इस सुरंग का मुँह काशी की ही हाफिज मस्जिद की ओर था। यह मस्जिद काशी विश्वनाथ मंदिर से कुछ ही दूरी पर है। यह सुरंग क्यों बनाई गई इसका उत्तर कोई कठिन नहीं है। हिन्दू समाज के श्रद्धा केन्द्र तथा ज्योतिर्लिंग काशी-विश्वनाथ को नुकसान पहुँचाने की कुत्सित मनोवृत्ति से जिहादियों ने उक्त सुरंग तैयार की।

मंदिर के अवशेषों पर बनी ज्ञानवापी मस्जिद

ध्यान रहे कि मूल विश्वनाथ मंदिर को औरंगजेब ने ४ सित. १६६९ को ध्वस्त कर दिया था। इसके बाद इस क्रूर मुगल ने ध्वस्त मंदिर की दीवारों पर मस्जिद खड़ी कर दी जो ज्ञानवापी मस्जिद के नाम से जानी जाती है। महारानी अहल्याबाई होल्कर ने अपने शासन-काल में सन् १७८० में लाहोरी टोला पर नया मंदिर बनवाया। श्रद्धालु दो सौ सालों से इसी मंदिर में भगवान विश्वनाथ के दर्शन कर रहे हैं। अब इस मंदिर का ध्वंस करने का षड़यंत्र किया जा रहा है।

उक्त समाचार को सेकुलरवादी मीडिया ने पूरी तरह छिपा लिया। ऐसी विकृति आ गई है हमारे मीडिया में भी।

वर्तमान का काशी विश्वनाथ मन्दिर

अब श्रीलंका जिहादियों का निशाना बना

आम मुसलमानों को जिहादी तत्व कहीं भी चैन से नहीं रहने देते। जहाँ कहीं मुस्लिम जनसंख्या पचीस-तीस फीसदी हो जाती है वहीं लव-जिहाद, अलगाववाद, हिंसा, उपद्रव शुरु हो जाते हैं।

चीन और म्यांमार में जिहादी यही कर रहे हैं। अब कट्टरपंथियों ने बौद्ध श्रीलंका को निशाना बनाया है। जिहादियों की हिंसा को रोकने के लिये श्रीलंका सरकार को ६ मार्च को आपात-स्थिति घोषित करनी पड़ी।

केण्डी श्रीलंका के बीचों-बीच स्थित दो लाख की आबादी का नगर है तथा यहाँ लगभग एक तिहाई मुस्लिम रहते हैं। लंका के मध्य प्रांत की राजधानी केण्डी में कई प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर भी हैं। कुछ दिनों पहले चार जिहादियों ने एक सिंहली ट्रक चलाने वाले की हत्या कर दी। ड्राइवर के अंतिम संस्कार के बाद उपद्रव शुरु हो गये।

श्रीलंका की सरकार ने केण्डी में कर्फ्यू लगाने के साथ-साथ पूरे देश में दस दिनों की आपात स्थिति लागू कर दी।

विज्ञान को श्रेष्ठ बताया तो प्रोफेसर पर तलवार चला दी

बांग्लादेश में जिहादियों की मनमानी चल रही है। वहाँ रहने वाले हिन्दुओं का जीवन तो खतरे में है ही, समझदार मुसलमानों पर भी जान-लेवा हमले हो रहे हैं।

गत ४ मार्च को सिलहट में एक जिहादी ने विज्ञान के एक प्रोफेसर पर उस समय तलवार से वार किये जब प्रो.जफर इकबाल एक गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। हमलावर फजलुर्रहमान को तुरंत पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया । उसने बताया कि प्रोफेसर इकबाल इस्लाम के दुश्मन हैं क्योंकि वे विज्ञान को इस्लाम से अच्छा मानते हैं।

प्रो. मोहम्मद जफर इकबाल सिलहट के 'शाहजलाल विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय' में प्राचार्य हैं। रविवार,४ मार्च को वे विवि में चल रही गोष्ठी में एक सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। उसी समय अचानक फजलुर्रहमान तलवार उठाये मंच की ओर लपका। कोई कुछ समझ पाता उसके पहले ही उस जिहादी ने प्रो.इकबाल के सिर और गर्दन पर तलवार चला दी।

परमाणु विज्ञान के विद्वान हैं पर ठेठ ग्रामवासी दिखते हैं

अस्सी साल के संभा जी भिड़े ने उस समय परमाणु विज्ञान में एम.एस.सी.किया था जब स्नातक होना भी बड़ी बात मानी जाती थी। पूरे विश्वविद्यालय में उन्होंने सर्वोच्च स्थान भी प्राप्त किया था। सेवा-निवृत्ति के बाद उन्होंने 'शिव-प्रतिष्ठान' की स्थापना की ओर उसके माध्यम से सामाजिक समरसता और राष्ट्र-भक्ति का जागरण करने में लगे हैं। इस साल के पहले दिन कुछ उपद्रवियों ने महाराष्ट्र के भीमा-कोरेगाँव में हिंसा फैला दी थी। सेकुलर जमात ने इसका पूरा दोष संभाजी भिड़े पर मढ़ दिया। सचाई यह है कि संभाजी दो साल से भीमा-कोरेगाँव गये ही नहीं, न ही उन्होंने कोई भाषण दिया। दुष्प्रचार किस तरह सच पर पर्दा डालने की कोशिश करता है, यह इस प्रकरण से स्पष्ट हो जाता है। वास्तव में हिन्दू समाज को तोड़ने में लगी भीतरी और बाहरी ताकतें उक्त प्रकार के उपद्रव कराते हैं।

तेरह साल का पृथु शतरंज का महारथी बनने की ओर

तेरह साल के पृथु गुप्ता ने गत २१ मार्च को जिब्राल्टर में आयोजित मास्टर्स शतरंज प्रतियोगिता जीत कर महारथी बनने की ओर एक कदम बढ़ा दिया है। उसकी ईलो रेटिंग भी २४०० के पार पहुँच गई है। दिल्ली के पृथु को रथी (इंटरनेशनल मास्टर) की पदवी तो मिल गयी है साथ ही उसने महारथी होने का पहला चरण भी फतह कर लिया है। अब एक-दो प्रतियोगिताएं और जीत कर वह महारथी बन जायेगा।

अपने देश में प्रतिभाओं की वास्तव में कोई कमी नहीं है।

उच्च न्यायालय ने आर्क बिशप के भ्रष्टाचार की जाँच के आदेश दिये

भारत में आने वाले ईसाई प्रचारक सबसे पहले केरल के मलाबार क्षेत्र में आये। यह लगभग अठारह सौ साल पहले की घटना है। क्षेत्र के तत्कालीन राजा ने पादरियों को चर्च बनाने के लिये जमीन दी तथा उपासना की सभी सुविधाएं दीं। उन ईसाई प्रचारकों के वंशज सायरो-मलाबार ईसाई कहलाते हैं। ये ईसाई अपने को सारे ईसाइयों से श्रेष्ठ मानते हैं। इस समुदाय में इन दिनों घमासान मचा हुआ है। इसके प्रमुख पादरी कार्डिनल जार्ज एलेनचेरी पर भ्रष्टाचार और घोटालों के कई आरोप लगे हैं और पुलिस इन आरोपों की जाँच कर रही है।

चर्च में घोटाले नई बात नहीं है। दुराचार के कई मामले पिछले दिनों सामने आये हैं। कुछ ननें (महिला पादरी) तो तंग हो कर आत्महत्या भी कर चुकी हैं। अंग्रेजी दैनिक **द हिन्दू** (११मार्च) के अनुसार केरल उच्च न्यायालय ने कार्डिनल और उनके दो साथियों की जाँच के आदेश दिये हैं। इसके बाद पुलिस ने प्राथमिकी लिख कर पूछ-ताछ शुरु की है। उधर कार्डिनल एलेनचेरी के विरोधियों ने वेटिकन (रोम) में बैठे पोप से मामले में हस्तक्षेप करने को लिखा है।

पारसी नये वर्ष पर चालीस लोगों को मार दिया आतंकियों ने

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में गत २१ मार्च को एक पूजा-स्थल पर दाएश (इस्लामिक स्टेट) के आतंकियों ने हमला कर दिया। इस हमले में आत्मघाती हमलावर सहित चालीस निर्दोष मारे गये तथा लगभग साठ लोग घायल हो गये। काबुल में गत तीन महीनों में दाएश का यह पाँचवाँ कायराना हमला है। विवाह समारोहों या पूजा-स्थलों पर ही ये हमले किये गये हैं। अफगानिस्तान में रहने वाले शिया मुसलमान ही अधिकतर इन हमलों का शिकार हुए हैं।

पारसियों का नया वर्ष २१ मार्च से प्रारम्भ होता है और इसे **'नौरुज'** कहा जाता है। वास्तव में पारसी समुदाय भी पहले नवरात्र उत्सव मनाता था। नये वर्ष से नौ दिनों तक उपवास और रात्रि जागरण रखे जाते थे। इसीलिये उत्सव का नाम **नौरूज** पड़ा। ईरान में नया वर्ष २१ मार्च से ही प्रारम्भ होता है। अफगानिस्तान में भी इस दिन अवकाश रहता है तथा शिया समुदाय भी अपने पूजा-स्थलों में साधना करता है।

चार सौ साल पहले तक पूरी दुनिया में नया वर्ष २५ मार्च से ही प्रारम्भ होता था। बाद में पोप ग्रेगरी ने १ जनवरी को नया साल मनाने का आदेश दिया।

महापुरुष पहचानो - पुष्यमित्र शुंग

चौराहे नाम मोदी-चौक किया तो जान से हाथ धोना पड़ा

बिहार के दरभंगा जिले का एक गाँव बलहा है। गाँव में एक चौराहा है जिसका नाम 'भदवा चौक' है। चौक के एक कोने पर तेज नारायण यादव की चाय की दुकान है। टाइम्स ऑफ इण्डिया (१७ मार्च) के अनुसार तेज नारायण भाजपा के कर्मठ कार्यकर्ता हैं और गाँव में उसका काफी प्रभाव भी है। गाँव वालों की सलाह के कुछ समय पहले उसने भदवा चौक का नाम बदल कर नरेन्द्र मोदी चौक कर दिया। इससे कुछ विरोधी कार्यकर्ता चिढ़ गये। वे चौका का नाम लालू-चौक करना चाहते थे। उस समय तो वे चुप रहे, पर गत १६ मार्च को लगभग एक दर्जन हथियार बन्द लोगों ने तेज नारायण के घर पर उपद्रवियों ने हमला कर दिया। उस समय तेज तो घर पर था नहीं इसलिये लगभग एक दर्जन हथियार बन्द लोगों ने उसके सत्तर साल के पिता राम चन्द्र यादव की हत्या कर दी।

बीकानेर में नववर्ष पर निकली दो कि.मी. लम्बी शोभायात्रा

भारतीय नववर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) के आगमन पर अब देश के कोने-कोने में अनेक प्रकार के कार्यक्रम होने प्रारम्भ हो गये हैं। इस वर्ष युगाब्द ५१२० और विक्रमी संवत् २०७५ का स्वागत भी देश भर में बड़े उत्साह और उमंग के साथ किया गया।

जयपुर में शहर के मुख्य मार्गों, भवनों और चोराहों के साथ-साथ घरों एवं आस-पास के मंदिरों को ओम अंकित केसरिया पताकाओं से सजाया गया था। नव वर्ष (इस बार १८ मार्च) का स्वागत मंदिरों में प्रातःकाल शंख, घंटे, घड़ियाल और अन्य वाद्य यंत्रों के मधुर नाद से हुआ। जयपुर के आराध्य देव श्रीगोविन्द देव जी के मंदिर में इस अवसर पर गज पूजन भी हुआ।

इस पावन पर्व के अवसर पर प्रदेश के जिला केन्द्रों पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये। **महेश नगर** में सेवा भारती द्वारा संचालित 'सेवा भारती बाल विद्यालय' के बालक-बालिकाओं ने रैली निकली। रैली प्रमुख मार्गों से होती हुई स्थानीय राधा कृष्ण मंदिर पर जाकर समाप्त हुई। **भारत विकास परिषद** की जयपुर इकाई ने सहकार मार्ग स्थित 'सेवा सदन' में कवि सम्मेलन का आयोजन किया। **चूरू** में 'सेवा भारती' की ओर से नववर्ष की पूर्व संध्या पर शहर के हनुमान मंदिर में ५१ जोड़ों ने सुन्दर काण्ड का पाठ किया। **धौलपुर** में वर्ष प्रतिपदा पर भारतीय शिक्षण मण्डल की ओर से संत रोड पर एकत्रित होकर वाहनों पर ओम अंकित पताकायें लगाई तथा वाहन चालकों को तिलक लगाकर मिठाई खिलाई। **बीकानेर** में 'विश्व हिन्दू परिषद' की ओर से वर्ष प्रतिपदा पर भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। दो किलोमीटर लम्बी इस यात्रा में सभी समाजों के लोगों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा मुस्लिम समाज ने रैली का स्थान-स्थान पर भव्य स्वागत किया। स्थानीय एम.एम. ग्राउण्ड से प्रारम्भ होकर यह यात्रा जूनागढ़ स्थित गणेश मंदिर पर जाकर समाप्त हुई जहाँ महाआरती का आयोजन रखा गया था। इस यात्रा में लगभग ५० हजार लोगों ने भाग लिया । **उदयपुर** में 'नववर्ष स्वागत समिति' की ओर से गोवर्धन सागर की पाल पर भारत माता की आरती एवं दीपदान का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महंत विरमनाथ जी महाराज थे।

भारत के परमाणु शक्ति सम्पन्न होने की २०वीं वर्षगाँठ

पोकरण में हुआ जाग्रत हिन्दू महासंगम का आयोजन

भारत सरकार ने बीस साल पहले ११ व १३ मई १९९८ को पोकरण में पाँच परमाणु परीक्षण कर भारत को परमाणु-शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाया। इस गौरवशाली घटना को बीस वर्ष हो रहे हैं। इस अवसर को यादगार बनाने के लिये गत १८ मार्च को पोकरण (जिला जैसलमेर) में संघ के २१ हजार स्वयंसेवकों ने विशाल पथ संचलन निकाला। संचलन का स्थानीय नागरिकों ने स्थान-स्थान पर पुष्पवर्षा कर 'वन्देमातरम्' तथा 'भारतमाता' की जय बोलकर भव्य स्वागत किया। संचलन शहर के चार प्रमुख स्थानों से प्रारम्भ हुआ। जिसका महासंगम ३ बजकर१८ मिनट१८सैकण्ड पर स्थानीय जयनारायण व्यास सर्किल पर हुआ। शहर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ यह संचलन 'महासंगम मैदान' पर पहुँच कर सम्पन्न हुआ।

जयनारायण व्यास सर्किल पर हुआ संचलन का महासंगम

यहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख श्री सुरेश चन्द्र ने संचलन में शामिल स्वयंसेवकों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि देश की रक्षा किसी एक जाति का कार्य नहीं है बल्कि समस्त हिन्दू समाज का सामूहिक कर्तव्य है जिसे हमें समझना होगा। संघ संपूर्ण समाज से भेदभाव समाप्त कर उसे बलशाली करने के प्रयास में लगा है। संगठित हिन्दू समाज ही सब समस्याओं का हल है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय सेना के पूर्व मेजर जनरल जी.डी.बख्शी थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत के युवा भारत की सबसे बड़ी शक्ति हैं। उन्होंने माता-पिता से अपने बच्चों को साहसी बनाने पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि १९७१ में पाकिस्तान के दो टुकड़े किये थे और अब पाकिस्तान के दो नहीं बल्कि चार टुकड़े करने होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जूना अखाड़ा हरिद्वार के महामंत्री श्री परशुराम गिरि जी महाराज ने की। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक सभी लोग भारत मां की संतानें हैं, ऐसे में यहां जात-पात के भेदभाव का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

पोकरण में आयोजित 'जाग्रत हिन्दू महासंगम' की प्रमुख विशेषता श्री, अखण्ड भारत, मां, स्वास्तिक, १८.३.१८, ओम, ध्रुव तारा, भगवा ध्वज, त्रिशूल आदि रचनाओं में बैठे स्वयंसेवक थे। संचलन में जैसलमेर जिले के प्रत्येक गांव और ढ़ाणी से पूर्ण गणवेश में आये हजारों स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर बीस शहीद परिवारों के सदस्यों को शॉल, मैडल तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया।

पंचांग- वैशाख (शुक्ल पक्ष)

युगाब्द-५१२०, विक्रमी-२०७५, शाके-१९४०
(१७ से ३० अप्रेल २०१८ तक)

अक्षय तृतीया -१८ अप्रेल, **चतुर्थी व्रत**-१९ अप्रेल, **गंगा सप्तमी**-२२ अप्रेल, **जानकी नवमी** - २४ अप्रेल, **एकादशी व्रत**-२६ अप्रेल, **प्रदोष** -२७ अप्रेल, **बुद्ध पूर्णिमा**-३० अप्रेल

चन्द्रमा - १७-१८ अप्रेल **मेष** राशि में, १९-२० अप्रेल उच्च की राशि **वृष** में, २१-२२ **मिथुन**, २३-२४ स्वराशि **कर्क** में, २५-२६ **सिंह** , २७-२८ **कन्या** तथा २९-३० अप्रेल को **तुला** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

वैशाख शुक्ल पक्ष में वक्री **गुरु** व **शनि** तथा **राहु** व **केतु** पूर्ववत क्रमशः तुला व धनु तथा कर्क व मकर राशि में रहेंगे। **शनि** १८ अप्रेल को प्रातः ७.१७ बजे धनु राशि में रहते हुए वक्री होंगे। **मंगल**, **सूर्य** तथा **बुध** क्रमशः धनु, मेष, तथा मीन राशि में यथावत बने रहेंगे। **शुक्र** १९ अप्रेल को रात्रि २.०८ बजे मेष से स्वराशि वृष में प्रवेश करेंगे।

पाथेय-कण के विशेषांकों की कड़ी में एक और विशेषांक

आगामी १ जून को प्रकाशित होने वाला अंक

धर्म-संस्कृति विशेषांक

- *धर्म और रिलीजन क्या हैं ?*
- *संस्कृति क्या होती है ?*
- *राष्ट्र, देश और राज्य में क्या अन्तर है ?*
- *राष्ट्रीयता का क्या अर्थ है ?*
- *सेकुलर-वाद क्या है ?*
- *अल्पसंख्यक कौन होते हैं ?*

आप भी इन विषयों से सम्बन्धित अपनी रचना भेज सकते हैं।

अंतिम तिथि- ३० अप्रेल २०१८

-: विज्ञापन दरें :-

रंगीन कवर पृष्ठ अंतिम	**₹ ५,००,०००/-**
रंगीन कवर २ तथा ३	**₹ २,००,०००/-**
रंगीन पृष्ठ	**₹ १,००,०००/-**
सामान्य पृष्ठ (पूरा)	**₹ ५०,०००/-**
सामान्य पृष्ठ (आधा)	**₹ २५,०००/-**
सामान्य पृष्ठ (चौथाई)	**₹ १५,०००/-**

भारत में तिरंगा यात्रा क्यों नहीं निकल सकती?

अंक संदर्भ : १६ फरवरी २०१८

अंक में कासगंज पर दी गई आमुख कथा पढ़ी। यह अल्पसंख्यकवाद का वीभत्स रूप है। राष्ट्रीय प्रतीक चिन्हों का अपमान करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिये।

***-गोपाल सैकड़ा,** दौसा*

अंक में प्रकाशित आमुख कथा 'क्या भारत में तिरंगा यात्रा नहीं निकल सकती' विचारोत्तेजक है। अपने ही देश में तिरंगा यात्रा निकालने पर जिहादियों द्वारा गोली चलाना देश तोड़क मानसिकता को दिखाता है। जिहादियों के राष्ट्र विरोधी मंसूबों के विरुद्ध सभी को मिलकर निर्णायक लड़ाई लड़नी होगी।

***-हुकमचन्द चौधरी,** सपोटरा, करौली*

कासगंज में तिरंगा यात्रा पर गोलियाँ चलाना जिहादियों की देश-द्रोही मानसिकता को दर्शाता है। ऐसे लोगों पर सरकार को बिना विलम्ब कार्रवाई करनी चाहिए।

***-मदन चौधरी,** सोडाला,जयपुर*

सच्चाई का आभास

'अंकित सक्सेना पर चुप है सेकुलर बिरादरी' समाचार सोचने के लिए मजबूर करता है कि हम कब तक कायरों की भांति बर्बरता झेलते रहेंगे। हिन्दू समाज को जागने और जगाने की अति आवश्यकता है।

***-आशुतोष शर्मा**, विद्याधर नगर, जयपुर*

संस्कार देने वाला स्तम्भ

'बाल जगत' स्तम्भ में साहसी बालिका मनु का प्रसंग प्रेरणादायक लगा। इस तरह के प्रसंग बालकों में संस्कार निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं।

***-टेकचन्द शर्मा,** झुंझुनू*

रोचक शुरुआत

'पहचानो ये महापुरुष कौन हैं?' स्तम्भ की शुरुआत रोचक है। पहेली की तरह ही संकेत के माध्यम से चित्र को पहचानना बच्चों में उत्सुकता पैदा करता है। यह स्तम्भ वास्तव में ज्ञानवर्धक है।

***-राजेन्द्र लालवानी,** अजमेर*

झकझोरती कविता

अंक में प्रकाशित दोनों कविताऐं 'चंदन की कुरबानी' और 'तोड़ नींद अब बढ़ जाओ' झकझोरने वाली है। आखिर कब तक हिन्दू समाज सहिष्णु बन कर बलिदान होता रहेगा?

***-प्रभुसिंह राणावत,** साण्डेराव,पाली*

क्रांतिकारी इतिहासकार

राष्ट्रवादी इतिहासकार पुरुषोत्तम नागेश ओक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होने का पाथेय कण ने अवसर दिया। ऐसे उत्कृष्ट क्रांतिकारी इतिहासकारों की जानकारी हमारी युवा पीढ़ी को अवश्य होनी चाहिये।

***-प्रवीण रावल,** डूंगरपुर*

थाम तिरंगा हाथ में

थाम तिरंगा एक छोटा सा
नौजवान था घूम रहा।
वंदेमातरम्,जयभारत को
हर गलियों में गुंजा रहा।।

**छोटी टोली में चंदन भी
अब कासगंज में झूम रहा।
पर ना पता था कि हर पल
वो अपनी मौत को ढूँढ़ रहा।।**

उत्साही वो थाम तिरंगा
गली-चौराहे पर ना रुका।
आखिर पहुँचा जिहाद गली में
जहाँ उसे अवरोध मिला।।

**पशुओं की कायर टोली में
पाक की जय के नारे लगे।
भारत के बेटों के मुँह पर देखो
जमकर तमाचे लगे।।**

अभिमानी हाथों में तिरंगा
पर गद्दारों ने उसे भून दिया।
चंदन के सीने में गोली छेद
निर्जीव उसे कर दिया।।

**अब रोना सबको यहाँ है
भारत की बर्बादी पर।
डरना है केसरिया धरती पर
गद्दारों की आबादी पर।।**

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
जैन बौद्ध से ये देश बना।
पर कुछ गद्दारों को रहना
भी यहाँ नरक लगा।।

**उठो यहाँ सब जात-पात से
धर्मों से लड़ना बंद करो।
सिर्फ लड़ो मानवता के लिए
फिर से देश को गर्वित करो।।**

***– प्रवीण धीया,** पीपाड़शहर,जोधपुर*

अमरीका ने सहायता बन्द कर दी है तो क्या हुआ, मिसाइलें हम ऐसे छोड़ेंगे।

साभार - टाइम्स ऑफ इण्डिया

बाल प्रश्नोत्तरी-१.स, २.द, ३.ब, ४.स, ५.स ६.अ, ७.अ, ८.अ, ९.ब,१०.स

ज्ञान ! चरित्र ! संस्कार !

श्री गुरुजी छात्रावास

उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर,

आदर्श नगर, जयपुर दूरभाष :2615249, मो. 9799394656

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

हमारी विशेषताएँ:–

1. प्रत्येक कक्ष में 4 छात्रों के रहने की व्यवस्था
2. पूर्णतया अनुशासित वातावरण
3. शुद्ध एवं उच्च गुणवत्तायुक्त भोजन
4. कमजोर छात्रों के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था
5. खेलों के लिए विस्तृत मैदान एवं उपयुक्त खेल सामग्री
6. योग्य खेल प्रशिक्षक
7. रायफल शूटिंग रेंज
8. विषय विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन
9. नित्य योग की कक्षाएँ
10. साप्ताहिक विशेष भोजन की व्यवस्था
11. स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण
12. शैक्षिक उन्नयन हेतु विशेष कक्षाएँ
13. एन.सी.सी.

-: विशेष :-

कक्षा 10वीं में 90% अंक पर 10,000 रु की एवं 94% से अधिक पर 20,000 रु की शुल्क में छूट दी जायेगी।

2008 से संचालित छात्रावास के भैयाओं की उपलब्धियाँ:–

1. सिद्धार्थ चारण (R.A.S.)
2. नितेश गुप्ता (C.A)
3. राहुल खण्डेलवाल(C.A)
4. अंकित शर्मा (C.A)
5. रौनक जैन (C.A)
6. खींवराज भाटी (M.B.B.S)
7. तेजवीर गुर्जर (M.B.B.S)
8. वैंकटेश दासवानी (M.B.B.S)
9. जितेन्द्र शर्मा (M.B.B.S)
10. राजेन्द्र कलिया (M.B.B.S)
11. बाबूसिंह भाटी (M.B.B.S)
12. अमित खण्डेलवाल(M.D.S)
13. नवनीत सारण(M.B.B.S)
14. संजय खोलिया (B.A.M.S)
15. टीनू पोषवाल (M.B.B.S)

2008 से 2017 तक नेशनल स्कूल गेम्स में छात्रावास के भैयाओं की उपलब्धियाँ :–

1. सोमवीर सिंह फुटबॉल (2010)
2. शुभम चौधरी फुटबॉल (2010)
3. उमराव सिंह जूड़ो (2011) चतुर्थ स्थान
4. सचिन शेखावत पिस्टल शूटिंग (2013)
5. कोविद सोलोत पिस्टल शूटिंग (2014)
6. सौरभ खटाणा पिस्टल शूटिंग (2014)
7. विकास जाट पिस्टल शूटिंग (2015)
8. यश दासवानी पिस्टल शूटिंग (2015)
9. आशराम चौधरी रायफल शूटिंग (2015)
10. चैतन्य चौधरी पिस्टल शूटिंग (2015)
11. कोविद सोलोत बीच वालीबाल (2016)
12. टीनू पोसवाल बीच वालीबाल (2016)
13. विकास जाट TUG OF WAR (2017) रजत पदक
14. अनिल वैष्णव TUG OF WAR (2017) रजत पदक
15. विकास यादव TUG OF WAR (2017) रजत पदक
16. देवेन्द्र नेहरा TUG OF WAR (2017) रजत पदक
17. उद्देश्य गूर्जर TUG OF WAR (2017) कांस्य पदक
18. रवि चौधरी TUG OF WAR (2017) कांस्य पदक
19. पुष्पेन्द्र स्वामी TUG OF WAR (2017) कांस्य पदक
20. आशाराम चौधरी TUG OF WAR (2017) कांस्य पदक
21. कोविद सोलोत बीच वालीबाल (2017)
22. किशन चौधरी बीच वालीबाल (2017)
23. मोहन वर्मा बीच वालीबाल (2017)

छात्रावास शुल्क 56, 000 रूपये वार्षिक (2 किस्तों में देय)

अध्यक्ष
दामोदर दास मोदी

प्रधानाचार्य
रामानन्द चौधरी
(9799394645)